फरीदाबाद
मजदूर समाचार
जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 291 1/– सितम्बर 2012

व्यवहारिक और अव्यवहारिक

आज का व्यवहारिक जीवन है :

* ढाई-तीन-चार-पाँच वर्ष आयु के शिशु-बच्चे को सुबह पाँच-छह-सात बजे उठाना। शिशु का तन व मन शौच करने का नहीं और शौच करवाने के प्रयास करना। बच्चे का तन व मन कुछ खाने का नहीं और कुछ खिलाने की कोशिशें करना। उनींदे बच्चे का मुँह धोना। अनमने शिशु को वर्दी पहनाना। व्यवहारिक होने के लिये माता-पिता अपने मन को मारते हैं और शिशु के शैशव को कुचलते हैं। स्कूल में दिहाड़ी वाले व्यवहारिक रहने के लिये बच्चों को बैठना सिखाते हैं, यानी, बच्चों के बचपन को मारते हैं।

* आज व्यवहारिक होने के लिये सीमेन्ट-स्टील-पेन्ट के निवास स्थान स्वीकार करना आवश्यक है। व्यवहारिकता अन्दर बिजली और बाहर सड़क की माँग करती है। शिशु तरसते हैं रेत-मिट्टी को। बच्चे तरसते हैं उछल-कूद-दौड़ को। प्रत्येक बच्चे के लालन-पालन के लिये विभिन्न आयु वर्ग के पचास से अधिक लोग आवश्यक हैं पर उपलब्ध अब एक-दो-तीन-चार ही हैं। इसलिये व्यवहारिक होना आज शिशु को हर कदम पर टोकना, बच्चे को हर समय टोकना लिये है। व्यवहारिकता आज प्रत्येक बच्चे को बम बना रही है।

* अच्छे भविष्य के लिये व्यवहारिकता बच्चे को विद्यालय भेजना लिये है। अच्छा स्कूल वह है जहाँ से पढे विद्यार्थियों का मण्डी में अच्छा भाव लगता है। अच्छा स्कूल महँगा स्कूल होता है। व्यवहारिक होना अच्छे स्कूल-कम अच्छे स्कूल में चुनना लिये है। और, अच्छा विद्यालय हो चाहे कम अच्छा विद्यालय, स्कूल के बाद ट्युशन आवश्यक व्यवहारिकता है। बच्चे दादा-दादी, नाना-नानी के साथ कम ही समय व्यतीत कर सकते हैं। स्कूल की व्यवहारिकता पीढियों के बीच सम्बन्ध तोड़ना लिये है। व्यवहारिक होना वृद्धाश्रमों की फसल लिये है, यानी, वृद्धजनों द्वारा मृत्यु का इन्तजार करना लिये है।

* ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा वाली वर्तमान समाज व्यवस्था में व्यवहारिक होना प्रत्येक के लिये चालाक होना, समझदार होना लिये है। युवावस्था में तो खासकरके व्यवहारिकता स्वयं की मार्केटिंग करना लिये है – मन में गुस्सा हो तब भी चेहरे पर मुस्कान रखना लिये है। मण्डी-मुद्रा की हलचलें और उथल-पुथल की वास्तविकता कामकाजी रिश्तों की व्यवहारिकता लिये है। प्रत्येक द्वारा हर समय अपनी छवि को जीना और अपनी वास्तविकता को छिपाने के प्रयास करना छिछले-सतही-अल्पकालिक सम्बन्धों की उपज लिये हैं।

ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा में व्यवहारिक जीवन के ऊपर दिये संक्षिप्त बयान से अलग व्यवहारिक जीवन हो सकता है क्या?

सीधा, सहज, सच्चा व्यवहार आज अव्यवहारिक है। गहरे, दीर्घ रिश्ते वर्तमान में अव्यवहारिक हैं। मजदूर बनने, मजदूर बने रहने के लिये जो करते हैं वह व्यवहारिक है परन्तु कोई मजदूर ही नहीं हो, यानी, मजदूरी-प्रथा की समाप्ति अव्यवहारिक है। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा को चुनौती अव्यवहारिक तो है पर यह जीवन-शक्ति की, स्वयं जीवन की अभिव्यक्ति है। विश्व-भर में आज की व्यवहारिकताओं को चुनौतियाँ देती अव्यवहारिकतायें बढ रही हैं। एक उदाहरण के तौर पर, आज अव्यवहारिकता की एक सुन्दर-

सुन्दर अभिव्यक्ति के लिये जून 2011 से 18 जुलाई 2012 के दौरान मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों की हलचलें देखें :

* 4 जून 2011 को ए और बी शिफ्ट के मजदूरों ने मिल कर फैक्ट्री पर से कम्पनी और सरकार का कब्जा हटा दिया। जोड़ बना कर, चेनें बना कर मजदूरों ने फैक्ट्री पर अपना नियन्त्रण स्थापित किया। उत्पादन बन्द और स्थाई मजदूर, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच नई गति से बढते तालमेल। मजदूरों की इस अव्यवहारिकता ने कम्पनी के हाथ-पाँव फुला दिये और सरकार को हक्का-बक्का किया। कम्पनी व सरकार के पक्ष वाले व्यवहारिक लोगों और मजदूरों के पक्षधर व्यवहारिक लोगों ने समवेत स्वर में स्थिति सामान्य करने की पुकार की। सामान्य स्थिति मानी फैक्ट्री में उत्पादन कार्य आरम्भ करना, कारें बनाने लगना। व्यवहारिक होना लेन-देन करना, भाव-तोल करना, सौदेबाजी करना लिये है। मजदूर अव्यवहारिक बने रहे, 13 दिन तक अव्यवहारिक बने रहे। मजदूरों ने अपरिचित मार्ग अपनाया था। अपरिचित मार्ग के लिये आवश्यक रचना नहीं हो पाने ने व्यवहारिक पक्ष को हावी किया और 16 जून को समझौते के बाद फैक्ट्री में उत्पादन आरम्भ हुआ।

* मैनेजमेन्टें बहुत व्यवहारिक होती हैं जबकि मजदूरों में अव्यवहारिकता हर समय बनी रहती है। ठेकेदार के जरिये रखे एक मजदूर के पक्ष में स्थाई मजदूरों ने जुलाई माह में फिर अपनी अव्यवहारिकता का परिचय दिया। मजदूरों को व्यवहारिक बनाने के लिये कम्पनी ने तैयारी की और जाल बुना। गुपचुप नई भर्ती की। रविवार, 28 अगस्त को रात को फैक्ट्री में 400 पुलिसवाले और स्टाफ को भेज कर 29 को सुबह ड्युटी के लिये पहुँचे मजदूरों पर बरखास्त, निलम्बित, शर्तों पर हस्ताक्षर का ब्रह्मास्त्र फेंका। मजदूर फैक्ट्री के बाहर। पुलिस, स्टाफ तथा नये मजदूर फैक्ट्री के अन्दर। एक तरफ फैक्ट्री के अन्दर सामान्य उत्पादन के प्रयास तो दूसरी तरफ स्थाई, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच बढते तालमेल। तीन हजार मजदूरों ने स्वयं को संगठित किया। मजदूरों की अव्यवहारिकता जब-जब मुखर होती है तब-तब मजदूर पक्षधर व्यवहारिक लोग व संगठन अति सक्रिय हो जाते हैं और मज़दूरों को नये सिरे से व्यवहारिक बनाने में जुट जाते हैं। मुम्बई, फरीदाबाद, गुड़गाँव आदि-आदि में अनेकों बार जाँचा-परखा जा चुका दाँव कम्पनी ने चला था इसलिये विश्वास से भरी थी। मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के दायरे में सिमटे रहना मजदूरों को कमजोर कर रहा था फिर भी युवा मजदूर लम्बे समय तक मामले को खीचने में सक्षम लगे तब दोनों पक्ष के व्यवहारिक लोग फिर हावी हुये। मजदूरों को व्यवहारिक बनाने के लिये 30 सितम्बर को दूसरी बार लिखित समझौता हुआ।

* सितम्बर में लगे नये मजदूर फैक्ट्री के अन्दर ही रहे। इस दौरान बी-प्लान्ट चालू हो गया था। समझौते के बाद 3 अक्टूबर को निलम्बित 44 को छोड़ कर स्थाई मजदूर, ट्रेनी, अप्रेन्टिस फैक्ट्री के अन्दर गये पर ठेकेदारों के जरिये रखे 1200-1500 मजदूरों को कम्पनी ने फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया। मजदूरों के बीच तालमेलों को तोड़ने का प्रबन्ध मैनेजमेन्ट ने कर लिया था और 2005 वाली होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर कम्पनी को दोहराने की राह पर थी – होण्डा में स्थाई, ट्रेनी, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर तब मिल कर लड़े थे पर स्थाई मजदूरों (बाकी पेज चार पर)

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

●*हरियाणा सरकार* द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.7.2012 से : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4967 रुपये ; उच्च कुशल मजदूर 5617 रुपये । एक पताः श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ । ●1 अप्रैल 2012 से *दिल्ली सरकार* द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन: अकुशल श्रमिक को मासिक 7020 रुपये (8 घण्टे के 278 रुपये); अर्धकुशल श्रमिक को मासिक 7748 रुपये (8 घण्टे के 298 रुपये); कुशल श्रमिक को मासिक 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये) । एक पताः श्रम आयुक्त, 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली-110054

कोका कोला मजदूर : "276-277 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 350 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***लिम्का, थम्स अप, कोक, स्प्राइट, रिमझिम*** बनाते हैं – सब मजदूरों के दाँत खराब हो गये हैं । कम्पनी 80 स्थाई मजदूरों तथा एक ठेकेदार के जरिये रखे लोडिंग-अनलोडिंग वाले 70 मजदूर 8-8 घण्टे की तीन शिफ्टों में दिखाती है । उत्पादन कार्य में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों और सब वरकरों की 12-12 घण्टे की शिफ्टों को मैनेजमेन्ट छिपाती है । तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 270 मजदूरों की तनखा 4000 रुपये, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं । रविवार को भी काम । सब मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से । वर्ष में वर्दी-जूते देते थे पर 2011 के नहीं दिये, 2012 के भी नहीं दिये हैं । रैस्ट रूम नहीं है । भोजन के लिये स्थान नहीं है । कैन्टीन नहीं है.... अमरीका से कोक वाले वर्ष में एक बार आते हैं तब एक कमरे में दो टेबल रखवा देते हैं, पँखे लगवा देते हैं, पेन्टर से 'कैन्टीन' लिखवा देते हैं । यहाँ के कोक वाले 6 महीने में दो बार फैक्ट्री आते हैं, मैनेजमेन्ट से घी-शक्कर हैं, अमरीका से आने वालों की सूचना दे देते हैं । मार्केट में कोक वाले जो फ्रिज इस्तेमाल होते हैं उनकी मेन्टेनैन्स कम्पनी बाहर दिखाती है जबकि होती फैक्ट्री में है – बेसमेन्ट के नीचे एक कमरे को गोदाम दिखाते हैं पर वहाँ खतरनाक हालात में 15 मजदूर फ्रिजों की मेन्टेनैन्स का कार्य करते हैं ।"

ताशा ऑटोमेटिव श्रमिक : "प्लॉट 109 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***सोना स्टीयरिंग*** का काम करते हैं । ई.एस.आई. और पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं । हैल्परों की तनखा 4200-4500 रुपये और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम । कैन्टीन थी, तीन महीने पहले बन्द कर दी । पीने का पानी खराब है । जुलाई की तनखा 16 अगस्त को दी ।"

व्हर्लपूल कामगार : "28 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में तीन असेम्बली लाइनों पर तीन शिफ्टों में प्रतिदिन 180 से 310 लीटर के 6300 फ्रिज बनते हैं । प्रत्येक लाइन पर स्थाई मजदूर, कैजुअल वरकर और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर अगल-बगल में काम करते हैं । ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा से ई. एस.आई. तथा पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई. एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर मजदूरों को फण्ड के पैसे नहीं मिलते । ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में 14 से 16 वर्ष आयु के बच्चे भी रहते हैं । यह बच्चे हर शिफ्ट में हर लाइन पर होते हैं – रात 10 से सुबह 6 वाली शिफ्ट में भी । व्हर्लपूल फैक्ट्री में असेम्बली लाइनों पर फ्रिज बनाते 14-16 वर्ष आयु के बच्चों की तनखा 4000-4200 रुपये ।"

रत्ना ऑफसेट वरकर : "प्लॉट सी-101 डी. डी.ए. शेड, ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 और रात 8 से अगली सुबह 9 तक की 11 तथा 13 घण्टे की दो शिफ्ट हैं । साप्ताहिक अवकाश नहीं । हफ्ते में शिफ्ट बदलती हैं तब शनिवार को रात 8 बजे काम आरम्भ करने वाले मजदूर 21½ घण्टे लगातार काम करते हैं – रविवार को साँय 5½ छूटते हैं । शनिवार तक दिन की शिफ्ट में रहे मजदूर रविवार को साँय 5 बजे फैक्ट्री पहुँचते हैं और लगातार 16 घण्टे काम करते हैं – सोमवार को सुबह 9 बजे छूटते हैं । ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम । दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते – हैल्परों को 7020 की जगह 4500-5000 रुपये तनखा और ऑपरेटरों को 8528 की जगह 7000-7500 रुपये तनखा । पचास मजदूरों में से 10 की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर नौकरी छोड़ने पर किसी मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते । तनखा हर महीने देरी से, जुलाई की 22 अगस्त को दी । हर मजदूर को तनखा का चेक देते हैं और उस पर हस्ताक्षर करवा कर चेक वापस ले लेते हैं । कम्पनी अधिकारी बैंक में चेक ले जाते हैं और मजदूरों को नकद भुगतान करते हैं । वेतन रजिस्टर में टिकट पर हस्ताक्षर करवाते हैं तब उसमें तनखा की राशि लिखी नहीं होती ।"

भूरजी सुपरटेक मजदूर : "गुड़गाँव में उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 244 और फेज-2 में प्लॉट 272 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में जुलाई की तनखा आज, 30 अगस्त तक नहीं दी है । प्लॉट 244 में 1000 मजदूर थे, अब मात्र 10 हैं और प्लॉट 272 में 300 थे, अब 125 हैं – 20 जुलाई को निकालते समय कहा था कि दो महीने बाद काम करने आ जाना । निकालने के दो दिन बाद, 22 जुलाई को जून की तनखा दी थी । फैक्ट्रियों में हवा वाले कूलर बनते हैं । सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से । भविष्य निधि राशि निकलवाने के लिये कम्पनी अधिकारी हर मजदूर से 1500 रुपये लेते हैं । पैसे ले कर कुछ की पी.एफ. का नकद भुगतान कर देते हैं पर अधिकतर मजदूरों से फण्ड निकलवाने का फार्म मँगवाते हैं । फार्म दिये साल-भर हो जाने के बाद भी पैसे नहीं मिलते – कम्पनी अधिकारी कहते हैं कि बैंक में पता करो । पी.एफ. नम्बर मजदूरों को नहीं बताते ।"

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं । मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें । अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें ।

ऑटोफिट श्रमिक : "प्लॉट 14 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में लगभग 900 मजदूर ***होण्डा*** और ***हीरो*** दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं । बी-शिफ्ट वालों को जबरन सी-शिफ्ट में रोक लेते हैं । रविवार को भी काम । महीने में करीब 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से । छोड़ने पर किये काम के पैसे नहीं देते – कहते हैं कि फिर यहीं लगो तब देंगे ।"

ट्रेक्टेल टिरफोर कामगार : "दुधौला रोड़, पृथला, पलवल स्थित फैक्ट्री में 24 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर लिफ्ट, क्रेन आदि बनाते हैं । चीन से बना-बनाया माल भी आता है जिस पर ट्रेक्टेल टिरफोर का लेबल लगा कर बेचते हैं । स्थाई मजदूरों के लिये बस है और ओवर टाम नहीं । ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सुबह 8½ से रात 7½ की ड्युटी है और अगली सुबह 8 बजे तक रोक लेते हैं – आधे घण्टे बाद फिर काम में लगो । जबरन रोकते हैं, महीने में 125-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से । ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूरों को बोनस नहीं और इन में से 100 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं । फरीदाबाद में फैक्ट्री थी तब 1995-96 में तीन बार हड़ताल हुई और 150 स्थाई मजदूर घटा कर 35 कर दिये गये थे ।"

बैन एक्सपोर्ट वरकर : "826 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 तक रोज काम और फिर रात 12½, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं । महीने में 80 से 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से । हैल्परों की तनखा 4500 और सिलाई कारीगरों की 5500-6000 रुपये । फैक्ट्री में पानी बहुत खराब । यहाँ ***मैकेन्जी, पीयर वन, लौरा*** का माल बनता है ।"

एफलाटस एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट 10 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से । सिलाई कारीगर तनखा तथा पीस रेट पर । कई मजदूरों ने ई.एस.आई. व पी.एफ. से इनकार कर रखा है ।"

एमको प्रेसमास्टर श्रमिक : "प्लॉट 19 सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में आर्डर पर 32 से 400 टन की पावर प्रेस बनाते हैं । सुबह 8½ से रात 7 की ड्युटी अनिवार्य है और अगली सुबह 8 तक रोक लेते हैं.... फिर आधे घण्टे बाद काम पर लगो.... ज्यादा काम आने पर 72 घण्टे तक फैक्ट्री से निकलने नहीं देते । महीने में तीसों दिन काम । अरजेन्ट आर्डर होता है तब 26 जनवरी, 15 अगस्त को फैक्ट्री बाहर से बन्द और अन्दर काम होता है । ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से । हैल्परों की तनखा 3500 (बाकी पेज तीन पर)

पत्र

(मजदूर समाचार, जुलाई 2012, प्रथम पेज का सन्दर्भ)

प्रस्ताव यह भी हो सकता है कि शरीर बेचने वालों, अभावग्रस्त आबादी, कुपोषित-बीमार बच्चों-औरतों, दरिद्र समुदाय की दुर्दशा, असमय मौत और भूख, बेरोजगारी के लिये जिम्मेदार सिर्फ और सिर्फ आर्थिक आतंकवाद है। दुनियाँ लगभग-लगभग राजनैतिक साम्राज्यवाद से मुक्त हो गई है। किन्तु अब वह आर्थिक साम्राज्यवाद के साये में जीने को विवश है। आर्थिक आतंकवाद का उद्देश्य ही है दुनियाँ भर में आर्थिक साम्राज्यवाद के टापू खड़े करना जो पूँजीवादी सरमायेदारों द्वारा खड़े किये गये बड़े-बड़े कल-कारखाने व अन्य संस्थानों के रूप में दृष्टिगोचर हैं जहाँ हम शरीर बेचने वालों के रूप में मौजूद हैं। आर्थिक आतंकवाद अपनी ओर से दुनियाँ की आबादी का ध्यान हटाने के लिये मजहबी आतंकवाद, अलगाववाद, हिंसाचार, अपराधों, युद्धों, अनेक प्रकार के विवादों को जन्म देता है। फौज, पुलिस, अदालत, जेल की व्यवस्था करता है। इन्हीं के माध्यमों से सरकार नाम की संस्था के अस्तित्व का (होने का) अहसास आबादी को कराता है। — शिव दत्त, बाघा, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

निमन्त्रण

आज विश्व के सात अरब लोग कई तानों-बानों से जुड़े हैं। यह समय बहुत-ही बड़े परिवर्तनों का दौर है। आज छोटे से छोटी बात जंगल की आग का चरित्र लिये है। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। सितम्बर में 30 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

मजदूर हितैषी मजदूर .....(पेज चार का शेष)

निमन्त्रण है : ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के सदस्य बनें। "समय नहीं है" के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद– 121001 है। फोन : 0129–6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालात करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं। फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब "मजदूर मोर्चा" के सम्पादक हैं। फोन : 9999595632

फैक्ट्रियों में.... पेज दो का शेष)

रुपये। एक सौ मजदूरों में दस की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। जाँच वाले आते हैं तब 90 मजदूरों को फैक्ट्री के पिछले गेट से निकाल देते हैं — एक बार स्टोर में बन्द कर दिया था, शौचालय में भी बन्द कर देते हैं।" ***नूरजहाँ फैशन कामगार :*** "629 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 8½ और रात 9½ से अगली सुबह 8½ की दो शिफ्ट हैं। शिफ्ट 15 दिन में बदलती हैं। अभी काम कम है, दो मंजिल की बजाय एक मंजिल पर काम हो रहा है — जून तथा जुलाई में मजदूर निकाले। जुलाई की तनखा आज, 30 अगस्त तक नहीं दी है।"

फैक्ट्री रिपोर्ट

सनबीम ऑटो

सनबीम ऑटो मजदूर : "38/6 किलोमीटर स्टोन, दिल्ली-जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 700 स्थाई मजदूर, 1000 ट्रेनी, 15 अप्रेन्टिस, पाँच ठेकेदारों के जरिये उत्पादन कार्य के लिये तनखा पर रखे 5000 मजदूर, बफिंग और फाइलिंग के लिये तीन ठेकेदारों के जरिये पीस रेट पर रखे 500 मजदूर, लोडिंग-अनलोडिंग के लिये ठेकेदार के जरिये रखते 100-150 मजदूर, ठेकेदार के जरिये रखे 60 कैन्टीन वरकर, ठेकेदार के जरिये रखे 50 सफाई कर्मी, ठेकेदार के जरिये रखे 25 माली, कम्पनी द्वारा स्वयं रखे और ठेकेदार के जरिये रखे गार्ड हैं। पच्चीस वर्ष से कार्यरत फैक्ट्री में आज 7500 मजदूर ***हीरो, सुजुकी, होण्डा, बजाज*** दुपहियों और ***मारुति सुजुकी, मर्सीडीज*** आदि के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। बफिंग तथा फाइलिंग करते 500 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं, रोज 12-18 घण्टे ड्युटी, कैन्टीन में अपने पैसों से भोजन, सिर्फ रात को कम्पनी चाय देती है, चोट लगने पर निकाल देते हैं। कैन्टीन वरकरों की 12-18 घण्टे ड्युटी, रोज 12 घण्टे पर 26 दिन के 2500-5000 रुपये (ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं), 60 में से 10 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ., बोनस नहीं, तनखा 20 तारीख के बाद। ठेकेदारों के जरिये तनखा पर रखे मजदूरों को पहले वर्ष में इन्सेन्टिव नहीं और तनखा 5000 रुपये, दूसरे वर्ष में इन्सेन्टिव का 30 प्रतिशत और फिर पूरा इन्सेन्टिव, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। दस वर्ष से कार्यरत ट्रेनी भी ट्रेनी ही हैं, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। स्थाई मजदूर, ट्रेनी, ठेकेदारों के जरिये तनखा पर रखे मजदूरों को कैन्टीन में 5 रुपये में थाली (15 रुपये कम्पनी की तरफ से), कम्पनी चाय व स्नैक्स देती है, और 250-300 रुपये प्रतिदिन इनसेन्टिव बनता है। स्थाई मजदूर जितने दिन छुट्टी करते हैं उतने दिन का इनसेन्टिव काट लिया जाता है। ट्रेनी और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की महीने में दो दिन से ज्यादा छुट्टी हो जाती हैं तो उनके इनसेन्टिव की पूरी राशि, 7500-8000 रुपये काट लिये जाते हैं। मैनेजमेन्ट जब चाहती है तब छाँट कर कुछ मजदूरों की महीने में दो से ज्यादा छुट्टी करवा देती है — 5 मिनट देरी पर हाफ डे लगा कर, अति आवश्यक होने पर भी शिफ्ट नहीं बदलना तब मजदूर को छुट्टी करनी ही पड़ती है। स्थाई मजदूर महीने में 18 से 30 हजार रुपये लेते हैं। फैक्ट्री में 1996 में 1400-1500 रुपये तनखा में 300 स्थाई मजदूर थे और वार्षिक उत्पादन 76 करोड़ रुपये का था जबकि आज स्थाई मजदूर 700 हैं और वार्षिक उत्पादन तीन हजार करोड़ रुपये का है — 1996 में डाइकास्टिंग की 14 मशीनें थी जबकि आज 65 हैं और ग्रेविटी डाइकास्टिंग की तब 35 मशीन थी जबकि आज 100 हैं। सितम्बर 1996 में यूनियन पंजीकरण के लिये मजदूरों ने हड़ताल की थी — 22 दिन हड़ताल, 18 स्थाई मजदूर निकाल दिये, यूनियन पंजीकरण नहीं होने दिया। कम्पनी ने 1997 में स्वयं यूनियन का पंजीकरण करवाया और जिसे प्रधान बनया वह 2007 तक रहा। अविश्वास प्रस्ताव पर प्रधान का इस्तीफा, पर नया प्रधान भी पहले जैसा ही — विरोध में 22 सितम्बर 2009 से मजदूरों द्वारा हड़ताल, 52 दिन की हड़ताल, मजदूरों पर कई मुकदमे, 9 स्थाई मजदूरों ने 2011 में इस्तीफे दे कर हिसाब ले लिया। न्यायालय के आदेश पर 29 अप्रैल 2012 को यूनियन का चुनाव — नया प्रधान। भिवाड़ी, राजस्थान में कम्पनी की दूसरी फैक्ट्री बन गई है।" ■

जुड़ने-जोड़ने के लिये
मजदूर हितैषी मजदूर

लक्षय है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना
सदस्य बनें, सहयोगी बनें

जो मजदूर इन मामलों को उठाना चाहते हैं: 1. सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देना; 2. आठ से ज्यादा घण्टे काम करवाना और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से नहीं करना; 3. स्थाई काम के लिये अस्थाई मजदूर रखना; 4. कानून द्वारा निर्धारित समय पर तनखा नहीं देना; 5. ई.एस.आई. कार्ड नहीं देना; 6. पी.एफ. नम्बर नहीं बताना, पी.एफ. की रसीद नहीं देना, फण्ड निकलवाने का फार्म नहीं भरना, फार्म जमा करवाने के बाद महीने के अन्दर पी.एफ. कार्यालय द्वारा भुगतान नहीं करना; 7. एक्सीडेन्ट होने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरना; 8. अन्य.......

*अकेले अथवा समूह में इन सवालों को उठाने वाले मजदूर संगठन से सम्पर्क करें। "अकेले क्या कर सकते हैं ?" का एक उत्तर **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन से जुड़ने में है।*

*कानूनों के उल्लंघन को उजागर करना स्वयं में एक दबाव लिये है। **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन सम्बन्धित विभागों में हर स्तर पर मामलों को उठायेगा। संगठन सभी विकल्पों का इस्तेमाल करेगा।*

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का। आज से डेढ सौ-पौने दो सौ वर्ष पहले भाप-कोयले वाली मशीनों के समय मजदूर काम के आधे समय में अपनी दिहाड़ी पैदा करते थे और बाकी का आधा समय फैक्ट्री संचालकों का मुनाफा पैदा करता था। भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। ..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. वह राजाओं का अन्तिम दौर था जब राजा खुद ही अपने कानूनों को तोड़ने लगे थे। आज कानूनों का उल्लंघन सामान्य है और कानूनों का पालन अपवाद की श्रेणी में है। हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है।

4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर फरीदाबाद में हम ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।......

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा **(बाकी पेज तीन पर)**

व्यवहारिक और अव्यवहारिक.. *(पेज एक का शेष)*

को अन्दर ले कर मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के जरिये रखे वे सब मज़दूर निकाल कर नये भर्ती किये थे तथा ट्रेनी रखना ही बन्द कर दिया।

★ मजदूरों की अव्यवहारिकता ने 7 अक्टूबर को जोर मारा और मारुति सुजुकी मानेसर समेत इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन मानेसर में ग्यारह फैक्ट्रियों पर से मजदूरों ने कम्पनियों व सरकार के कब्जे हटा दिये। तब हर प्रकार की व्यवहारिकता ने जोर लगाया और 8 अक्टूबर को 7 फैक्ट्रियों पर से मजदूरों ने अपना नियन्त्रण हटा लिया, कम्पनियों का उन पर पुनः कब्जा हो गया। आठ अक्टूबर से सुजुकी समूह की चार फैक्ट्रियों तक सिमटा मजदूरों का नियन्त्रण व्यवहारिकता को रियायत देना लिये था। फिर भी एक मजदूर के शब्दों में: "7 से 14 अक्टूबर के दौरान मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर बहुत-ही बढिया समय रहा। न काम की टेन्शन। न आने-जाने का तनाव। न बस पकड़ने की चिन्ता। न खाना बनाने की टेन्शन। न खाना खाने की चिन्ता कि 7 बजे ही खाना है या 9 बजे ही खाना है। न इस बात की टेन्शन कि आज कौन-सा दिन है और कौन-सी तारीख चल रही है। निजी बातें बहुत होती थी। एक-दूसरे के इतने करीब कभी नहीं आये जितने इन 7 दिनों में आये।"

★ कम्पनी तथा सरकार की व्यवहारिकता पीछे हटी और मजदूरों की अव्यवहारिकता को रियायतें दी। तीसरा लिखित में समझौता 19 अक्टूबर को हुआ। ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूर पुनः फैक्ट्री में लिये गये। और फिर, एक कार 45 सैकेण्ड में बनाने की जगह एक मिनट में एक कार बनाना निर्धारित।

★ व्यवहारिकता नई व्यूह रचना में जुटी। अक्टूबर में सुजुकी पावरट्रेन के तीन मजदूरों ने मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों के साथ जोड़ बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई थी। यह तीन मजदूर सरकार और कम्पनी तथा 19 अक्टूबर के मारुति सुजुकी समझौते के खिलाफ खड़े रहे तब इन्हें अलग कर 21 अक्टूबर को समझौता हुआ था। विरोध करने वाले तीन मजदूर निलम्बित और हस्ताक्षर करने वालों को स्थापित करने के लिये सुजुकी पावरट्रेन मैनेजमेन्ट तथा यूनियन के बीच तीन वर्षीय समझौता। अपने नियन्त्रण के बारे में आश्वस्त होने पर 17 अप्रैल 2012 को तीन निलम्बित मजदूरों को बरखास्त किया गया और समझौते करने वालों ने फैक्ट्री में मजदूरों को काबू में रखा। फिर साहबों ने सुजुकी पावरट्रेन और मारुति सुजुकी कम्पनियों को मिला कर एक किया – चिन्हित विरोधी मजदूरों को कमजोर करने के लिये। सितम्बर में फैक्ट्री के अन्दर रहे लोगों को बनाये रख कर और बी-प्लान्ट को आरम्भ कर साहबों ने चिन्हित विरोधी मजदूरों की शक्ति घटाई ही थी। यूनियन का पंजीकरण और यूनियन को मान्यता दे कर कम्पनी ने स्थाई मजदूरों तथा अन्य मजदूरों के बीच दूरियाँ बढाने का पुख्ता प्रबन्ध किया। छेड़ने-उकसाने और नियन्त्रित विस्फोटों के जरिये व्यवहारिकता को मजदूरों में पुनः स्थापित करने के पथ पर साहब लोग अग्रसर थे।

★ रियायतें कुछ राहत लिये थी पर मारुति सुजुकी मानेसर मजदूर तो अपने कदमों से अपने जीवन को बदलने, जिन्दगी को सुखद बनाने का विश्वास लिये थे जबकि ले-दे कर जीवन पहले जैसा ही रहा। कम्पनी द्वारा रियायतों के बावजूद मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों का जीवन मजदूरों वाला जीवन ही बना रहा, असहनीय बना रहा। इसलिये 18 जुलाई 2012 को मजदूरों ने वर्तमान व्यवस्था के दो प्रतीकों को अपने निशाने पर लिया, फैक्ट्री और मैनेजर टारगेट बने।

हमारे पूर्वजों की अव्यवहारिकता सामाजिक प्रक्रिया में कई महत्वपूर्ण मोड़ लाई। मजदूरों की ही बात करें तो 1871 में फ्रान्स में मजदूरों ने पेरिस कम्यून की रचना की – सेना, पुलिस, न्यायालय भंग किये, जेल तोड़ी, सब मजदूर हथियारबन्द। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा के पक्षधरों ने हजारों मजदूरों का कत्ल कर पेरिस कम्यून तोड़ दी थी पर आज भी पेरिस कम्यून पथ दिखा रही है। रूस में 1905 में अव्यवहारिक मजदूरों ने सोवियतों का गठन कर पेरिस कम्यून की राह पर कदम बढाये और खूनखराबा झेला। रूस में ही 1917 में सोवियतें फिर उभरी। अक्टूबर 1917 में सेना, पुलिस, न्यायालय, जेल भंग कर आम मजदूर हथियारबन्द हुये और सोवियतें नई समाज रचना की वाहक बनी। लेकिन कठिन परिस्थितियों में व्यवहारिकता पुनः उभरी और लाल सेना के नाम से 1918 में फिर स्थाई फौज का निर्माण किया गया। सेना की स्थापना, लाल सेना की शक्ति का बढना मजदूरों की सोवियतों को शक्तिहीन करना लिये था। कुचली जाने की बजाय सोवियतों का पतन हुआ जो कि पचासों वर्ष पर्दा बन कर ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा को टिकाने में सहायक बना।

आज हमारे चारों तरफ मारुति सुजुकी मानेसर 18 जुलाई वाली परिस्थितियाँ हैं और बढ रही हैं। विश्व-भर में ऐसे ही हालात हैं और बढ रहे हैं। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा के खिलाफ और नई समाज रचना के लिये आज इससे अधिक सुखद कोई बात हो सकती है क्या? ध्वंस, विसर्जन, नई रचना के मुहाने खड़े हैं हम – इससे सुखद वर्तमान एवं निकट भविष्य कोई है क्या ?■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**